Rajasthan Journal of Sociology

ISSN 2249-9334

Volume 13 October 2021

Peer Reviewed and UGC-CARE List Bilingual Journal of Rajasthan Sociological Association

भारत में सामाजिक-आर्थिक असमानता: उभरती चुनौतियां

Rajasthan Journal of Sociolo
2021, Vol.

सुमित्रा शर्मा

सार: समाज में संसाधनों का असमान वितरण, उच्च व निम्न पद, प्रस्थिति और इससे उत्पन्न होने वाले अन्य परिणामों का कारण बनता है। समाज में व्याप्त सामाजिक असमानता व्यक्तियों, परिवारों और समूहों के मध्य संसाधनों के वितरण द्वारा निर्धारित होती है। असमानता सर्वव्यापी प्रघटना है, जो सभी जगह समान रूप से गहन, एककारकीय और अखंड नहीं है। सामाजिक असमानता निर्मित व पुनःनिर्मित होती रहती है, उसके स्वरूप परिवर्तित होते रहते हैं। सामाजिक-आर्थिक असमानता निरपेक्ष प्रघटना न होकर सापेक्ष प्रघटना है। समाज, समुदाय व परिवार में समानता व असमानता सह-अस्तित्व में हो सकती है। आय, व्यवसाय, शिक्षा और प्रतिस्पर्धा जैसे मापदंडों द्वारा असमानता के संपूर्ण पहलुओं की व्याख्या नहीं की जा सकती बल्कि इसके साथ औघोगिक रूप से उन्नत समाजों में प्रतियोगिता व प्रायोजकता भी असमानता के प्रमुख मूल्यों के रूप में प्रचलित आधार है। सामाजिक-आर्थिक असमानता का विश्लेषण करने के लिए इसके स्पष्ट व वास्तविक पहलुओं के मध्य संबंधों की पहचान कर उचित रूपरेखा बनानी आवश्यक है। यह हो सकता है कि समाज में प्रचलित असमानता के व्यवहार व स्वरूपों में भिन्नता हो। वर्तमान में असमानता के आधारभूत मूल्यों जैसे सामाजिक प्रस्थिति, पवित्रता-अपवित्रता, अस्पृश्यता, संस्तरण आदि में न केवल परिवर्तन हुआ है, बल्कि ये परिवर्तन सामाजिक स्तरीकरण की परंपरागत व्यवस्था में विरोधाभास, अनिरंतरता और विखंडन को भी बताते हैं। वर्तमान में जाति, वर्ग, शक्ति और सामाजिक गतिशीलता के मध्य नैरन्तर्य नवीन ऐतिहासिक व प्रासंगिक रूप में उभरा है। सामाजिक-आर्थिक असमानता को समझने के लिये एक निश्चित समय में विभिन्न कारकों और शक्तियों की प्रभावशीलता का पता लगाने में प्रमुख कार्य कारणों के साथ बहु कार्य कारणों को भी समझा जाना चाहिए। प्रस्तुत प्रपत्र में भारत में आर्थिक विकास एवं वृद्धि के नाम पर अमीर व गरीब के मध्य बढ़ते भेद, सामाजिक-आर्थिक असमानता, असमानता के प्रचलित प्रतिमान, युवा जनसमूह के समक्ष उभरती चुनौतियां, आदि को द्वितीयक स्रोतों से एकत्रित आंकड़ों के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है।

संकेत शब्द: असमानता, आर्थिक विकास, पूँजी, पूँजीवाद, समग्र विकास, संसाधन, गरीबी, अभिजात।

प्रस्तावना

असमानता केवल एक वैचारिक घटना के संदर्भ में उच्च और निम्न संबंधों के किसी भी आदर्शात्मक और मूल्यांकन संबंधी पहलुओं की व्याख्या नहीं करती, वरन एक संरचनात्मक पहलू के रूप में असमानता अस्तित्व की स्थितियों व संसाधनों के वितरण और उन तक पहुंच में अंतर को भी इंगित करती है। असमानता से संबंधित मानदंड किस प्रकार सामाजिक संबंधों को विकसित, परिवर्तित व प्रभावित करते हैं? वैश्विक स्तर पर असमानता से

विचारों के निर्माण में प्रमुख भूमिका किसकी होती है? विचारों के उत्पादन व निर्माण में राज्य की क्या भूमिका है? जाति में लचीलापन, नवीन आयामों का उदय, स्थाई मूल्य संरचना और संरचना के अन्य भागों में परिवर्तनों का उदय, नवीन मध्यम वर्ग का उदय, अमीर का उत्थान व गरीब का सर्वहाराकरण, विचारधारा और वैश्वीकरण आदि वर्तमान में असमानता की प्रासंगिकता को समझने के लिए कुछ प्रमुख विचारणीय मुद्दे हैं। भारत में परम्परागत सामाजिक संबंध नवीन स्वरूप धारण कर अपने अस्तित्व के लिए नवीन तार्किक आधार तलाश रहे हैं। वर्तमान समाज कठोर रूढ़िवादिता व परम्पराओं पर आधारित समाज नहीं है, और न ही आर्थिक स्थिति, शक्ति और सत्तीकरण की जटिलताओं का वैयक्तिक संवेदन इसमें है। समाज के उर्ध्वगामी गतिशील वर्ग द्वारा पद की प्राप्ति, नौकरियों व सम्मानजनक प्रस्थिति को सशक्त एवं भौतिकवादी जीवन शैली के साधन के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीति के क्षेत्रों में उभरते हुए मध्यम वर्ग के क्रिस्टलीकरण के माध्यम से इस वर्ग के लोगों की अस्थिरता को स्पष्ट देखा जा सकता है। वर्तमान में सामाजिक-आर्थिक असमानता के वैचारिक और संरचनात्मक आधारों पर वाद विवाद के न केवल नए केंद्र उभर रहे हैं, बल्कि वैकल्पिक विचारधारा के प्रतिमान भी प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

असमानता पर वैचारिकी तथ्य

भारतीय समाज में सामाजिक-आर्थिक असमानता कोई नवीन उभरती हुई प्रघटना नहीं है बल्कि असमानता के स्वरूप इसकी ऐतिहासिकता में रचे बसे हैं। यघपि समय-समय पर असमानता के आधारो में परिवर्तन अवश्य आता रहा है। जाति, वर्ग व लैंगिक असमानता के प्रमुख आधार रहे हैं, जो न केवल जीवन अवसरों का निर्धारण करते हैं बल्कि अस्तित्व के अवसरों का भी निर्माण करते हैं। वर्तमान में असमानता के आधारों में परिवर्तन आ रहा है, सामाजिक आधार (जाति) के स्थान पर आर्थिक आधार (वर्ग) महत्वपूर्ण हो गया है। बेतेई (1999) ने असमानता के सामाजिक व आर्थिक कारकों को महत्वपूर्ण माना है। उनके अनुसार जातियां समाज के सभी स्तरों पर एक ही तरह से संचालित नही होती। आज मध्यम वर्गीय भारतीयों का जाति और परिवार के प्रति अभिमुखन में भिन्नता देखी जा सकती है। जहाँ पहले जाति को अधिक प्राथमिकता व महत्व दिया जाता था वहीं वर्तमान में जाति के स्थान पर परिवार व्यक्ति के लिए प्राथमिक हो गए हैं। व्यक्ति अपनी जाति की मांगों को नकार सकता है, लेकिन परिवार के प्रति अपने दायित्वों को नहीं। अतः इस अर्थ में अब जाति वह संस्था नहीं रह गई है, जिससे कि परिवार की निरंतरता बनी हुई हो। जाति अब मुख्यतः समानता की ओर बढने में एकमात्र बाधा नहीं रह गई है। वर्तमान में समाज में व्याप्त असमानता के संदर्भ में जाति की सक्रिय भूमिका कमजोर हो गई है, कम से कम सामाजिक संस्तरण के ऊपरी स्तर पर जहां पर जाति सामाजिक नियोजन और नियंत्रण का महत्वपूर्ण आधार नही है। वर्तमान में समानता व असमानता के मार्ग को प्रशस्त करने व उसमें व्यवधान डालने की भूमिका में परिवार महत्वपूर्ण हो गए है, अतः असमानता को परिवार और शिक्षा, परिवार और व्यवसाय, परिवार और सामाजिक गतिशीलता को इन नवीन संदर्भों में समझने की आवश्यकता है।

दांडेकर (1999) ने सामाजिक असमानता के आर्थिक कारक को प्रमुख माना है। उन्होने पूँजीवाद को असमानता का प्रमुख कारक माना है। दांडेकर का मत है कि विभिन्न श्रेणियों के संगठनात्मक और प्रबंधकीय कौशल की

भूमिका, संस्तरण और सामाजिक गतिशीलता, श्वेतवसन कार्मिकों से युक्त नवीन मध्यमवर्ग, श्वेतवसन व्यवसायों से जुड़ी सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ साथ भौतिकवादी जीवनशैली पूँजीवाद के साथ विकसित हो रही है। बुर्जुआ और सर्वहारा वर्ग के मध्य कई प्रस्थिति समूह उभर रहे हैं। भारत की तीन चौथाई जनसंख्या कृषि, असंगठित श्रम और घरेलू उद्योगों में लगे हैं और मात्र 9.6 प्रतिशत शारीरिक श्रम करने वाले श्रमिक है। इसमें राज्य की भूमिका सर्वहारा के कल्याण के लिए काम करने वाली एजेंसी के रूप में है। दांडेकर का मत है कि भारत में स्थितियां कार्ल मार्क्स द्वारा बताई गई परिस्थितियों से दूर है, क्योंकि भारत में पूँजीवाद अभी पूर्ण विकसित स्थिति में नही पहुँचा। एक बडा वर्ग मौजूद है जो कार्यशील आबादी का पांचवां हिस्सा है, जो न बुर्जुआ है और न सर्वहारा लेकिन सर्वहारा में सम्मिलित होने वाला है। यह स्थिति चिन्ताजनक है, क्योंकि इससे असमानता की खाई और अधिक चौडी होती जायेगी। नागराज (2012) ने भारत में सामाजिक-आर्थिक विकास के संदर्भ में प्रश्न उठाये है कि 'क्या किसी भी देश में नीति व्यवस्थाओं व गरीबी के मध्य संबंध है?' उनका मत है कि विकास ही सब कुछ नही है। गरीबी की अधिकता, निरक्षरता और कम वजन वाले बच्चे तीव्र आर्थिक विकास के बावजूद भी बने हुए हैं। नागराज कहते है कि क्या समावेशी विकास सम्भव है? क्योंकि भारत में विकास अब तक बहुत अधिक समावेशी नही रहा। बच्चों में कुपोषण, साक्षरता का धीमा प्रसार, कृषि में धीमी वृद्धि, किसान आत्महत्या आदि में कमी नही आ रही है। पूँजीवादी विकास की जरूरतों पर ध्यान केन्द्रित करके विकास को बढावा देने के लिए राज्य द्वारा संकीर्ण विकास को प्राथमिकता दी जा रही है।

सिंह (2017) का मत है कि असमानता एक सापेक्ष अवधारणा है। यह देश व राज्य में आय के असमान वितरण को इंगित करता है। असमान आय के अनेक संस्थागत एवं गैर संस्थागत कारण हैं। अवसरों की असमानता, असमान क्षमताएं, सम्पत्ति के स्वामित्व के संदर्भ में असमानता आदि। आय व धन के असमान वितरण के कारण ही कुछ लोग अमीर व कुछ लोग गरीब होते हैं जिससे असमानता व गरीबी में वृद्धि होती है। आय व धन की असमानता को किसी देश में लोगों के स्वामित्व वाली सम्पत्ति के रूप में मापा जाता है। वर्मा एवं श्रीवास्तव (2021) के अनुसार भारत में लोकतंत्र प्रतिस्पर्धात्मक है। जहाँ अधिकांश मतदाता गरीब हैं। भारत में गरीबी की समस्या रोजगार के अवसरों की कमी एवं रोजगारविहीन विकास के कारण अधिक कठोर एवं विकट प्रतीत होती है। महिलाओं, निम्न जातियों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी अधिक है। सामाजिक-आर्थिक असमानता और भेदभाव के साथ समस्याओं के निराकरण, कानूनी प्रावधानों के कार्यान्वयन में देखी जा सकती है। साथ ही वे समाज में उनकी दृढता के साथ गहराई तक जमें रहने के जिम्मेदार कारकों को इसका कारण मानते हैं। इस संदर्भ में समाज में सकारात्मक कार्यवाही, प्रणाली तंत्र की कमियों को पाटने में राज्य और नागरिकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, इसके साथ ही समन्वित विकास के लिए नीतियों को भी उन्होंने आवश्यक माना है।

आधुनिक भारत के संस्थापक जवाहरलाल नेहरू का मत था कि ' युग परिवर्तन हो रहा है, युग की भावना समानता के पक्ष में है, यद्यपि व्यवहार में प्रत्येक स्थान पर इसे अस्वीकारा जाता है, लेकिन युग भावना की विजय अवश्य होगी'। जवाहरलाल नेहरू मौजूदा समय में इस नवीन भावना के साथ बदलाव का आह्वान करते थे। इसी संदर्भ में संविधान सभा के सदस्यों का उद्देश्य था कि भारत में समानता नवीन न्यायिक व राजनीतिक व्यवस्था का आधार बने। पिछले कुछ दशकों में संविधान के द्वारा सार्वजनिक जीवन में समानता के प्रति प्रतिबद्धता को बार-बार व्यक्त

...किया गया। राजनेता, न्यायधीश, कर्मचारी, वकील, धार्मिक नेता, पत्रकार और विद्वान एवं सामाजिक कार्यकर्ता ...ही एक ही आवाज में समानता के पक्ष में बोलते नजर आते हैं। प्रत्येक व्यक्ति सार्वजनिक रूप से समानता के ...र्थन में बोलने को तैयार रहता है, असमानता व संस्तरण के समर्थन में नहीं। यहाँ प्रश्न उठता है कि समाज में ...मानता को समर्थन नहीं मिलने के बावजूद इसके स्वरूपों में वृद्धि देखने को क्यों मिलती है?

समानता के मूल्य एवं विरोधाभास

...रतीय समाज में समानता एक आदर्श है, लेकिन व्यवहार में असमानता अभी भी मौजूद है। यहाँ प्रश्न उठता है कि ...मानता की भावनाएं इन कुछ वर्षों में दृढ हुई है, तो फिर सामाजिक व्यवहार में इसकी कमी क्यों है? व्यवहारिक ...र में समानता की निरन्तरता में बाधाएं कहां है? ये प्रश्न हमारी चिन्ता को बढाते हैं। राष्ट्र के आदर्श के रूप में ...रण को समानता द्वारा प्रतिस्थापित किये जाने पर होने वाले परिवर्तनों को कम नहीं आंका जाना चाहिए। ...धुनिक समाज कुछ विशिष्ट प्रकार की असमानताओं व कुछ नवीन प्रकार की व्यवस्थाओं का गठन करता है जो ...य, सम्मान और सत्ता की असमानता, प्रचलित असमानता के आदर्श में समाहित है। अतः असमानता की ...यकता समाप्त नहीं होती वरन उसका पुनरूत्पादन होता रहता है। अतः मात्र सामाजिक पक्षों की श्रेणीबद्धता व ...म्बद्धता से संबंधित जुड़े प्रश्नों को ही नहीं उठाया जाना चाहिए बल्कि इस बात को उठाया जाना चाहिए कि यह ...य, सम्मान एवं आय) एक ही प्रकार एवं परिवार के लोगों के पास पीढी दर पीढी कैसे आ जाती है? ...वसायिक श्रेणीबद्धता व गतिशीलता आधुनिक असमानता की दो महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं और इस श्रेणीबद्धता को ...रत में जन समर्थन भी अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त है। व्यवसायों की श्रेणीबद्धता एवं गतिशीलता में पीढी दर पीढी ...न्तरता बनी रहती है, अतः ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि भारत में अधिकांश व्यक्ति वास्तव में चाहते हों कि ...मानता की श्रेणियों का उन्मूलन हो जाए। जब भारत में लोग कहते हैं कि वे असमानता और इसके विभिन्न ...रूपों के विरोध में हैं, तब उनके मन में समानता को लेकर दो विरोधाभासी विचार होते हैं प्रथम आदर्शात्मक एवं ...तीय व्यवहारिक। ये दोनो विचार उन्हें स्वयं को ही स्पष्ट नहीं होते। समग्र रूप से समाज व इसके विभिन्न ...स्थानों और संगठनों में भी उच्चतम और निम्नतम के मध्य भेद को महसूस किया जा सकता है।

...रत में सार्वजनिक संस्थाओं में बहुत अधिक असमानताएं देखने को मिलती हैं, लेकिन अब उन संस्थाओं में भी ...रिवर्तन आ रहा है। वस्तुतः समाज में सामाजिक-आर्थिक असमानता आय, सम्मान और सत्ता के संदर्भ में तथा ...शिष्ट रूप से नौकरीपेशा वर्ग में इस प्रकार की असमानता की निरंतरता अधिक है। जहाँ एक ओर अधिकारी वर्ग ...के सदस्य उच्च पदासीन हैं व इस वर्ग की पीढी दर पीढी जीवन अवसर व अस्तित्व के साधनों तक पहुंच बनी ...रही है तथा इन अवसरों का इस वर्ग में पुनरूत्पादन भी होता रहता है, वही नौकरीपेशा वर्ग के अन्य कर्मचारियों ...व श्रमिकों में ये अवसर कम हो जाते हैं। यहां प्रश्न उठता है कि समाज में समानता के अवसरों के लिए व्यक्त की ...ई चिंताओं व सभी कानूनी बाधाओं को दूर करने के बावजूद समाज के कुछ सदस्यों के लिए ही उच्च स्तर की ...नौकरियों के अवसर क्यों उपलब्ध होते हैं, वही अन्य के लिए असंभव नहीं तो यह कठिन अवश्य होते हैं? वी. ...र. दांडेकर के अनुसार जिस अनुपात में पूँजीपति वर्ग की पूँजी विकसित होती है उसी अनुपात में सर्वहारा वर्ग व ...आधुनिक कार्यकारी मजदूर वर्ग विकसित होता है, अतः भारतीय समाज में आदर्शात्मक रूप से समानता के मूल्य तो

समाहित हैं लेकिन इसके विपरीत समानता के व्यवहारिक मूल्य भिन्नता लिये हुए हैं। इसी कारण वर्ग व्यवस्था की निरन्तरता पीढीयों तक उसी रूप में बनी रहती है, जिस रूप में वह पहले थी।

असमानता के प्रतिमानः ऑक्सफेम रिपोर्ट का विश्लेषण

भारत में व्यक्ति शिक्षा, संपत्ति और जीवन के निर्धारित अवसरों की निरंतरता के साथ जन्म लेता है। ऑक्सफैम की रिपोर्ट 'रिवॉर्ड वर्क, नॉट वेल्थ' (2018) के अनुसार 2017 में वैश्विक स्तर पर उत्पन्न धन का 82 प्रतिशत भाग मात्र 1 प्रतिशत धनी लोगों के पास सिमट गया, जबकि वैश्विक स्तर पर 3.7 अरब जनसंख्या जो गरीब की श्रेणी में आते हैं, की आय में कोई वृद्धि नहीं देखी गई। यह असमानता लगातार तीव्रगति से भिन्न स्वरूपों में बढ रही है। आज भारत में डॉलर अरबपतियों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है लेकिन इसी के साथ विश्व की एक तिहाई जनसंख्या भूख एवं गरीबी में अपना जीवन व्यतीत कर रही है। भारत में वर्ष 2017 में 17 नए अरबपति जुडे, अब भारत में अरबपतियों की कुल संख्या 101 हो गई उनमें 4 महिला अरबपति भी हैं। भारतीय अरबपतियों का धन एक वर्ष के दौरान 20.7 लाख करोड से अधिक बढ गया है जो कि पहले 4.89 लाख करोड़ था। यह धन सभी राज्यों के स्वास्थ्य एवं शिक्षा में लगने वाले कुल बजट का 85 प्रतिशत बजट के लिए पर्याप्त था। गरीबी का यह भार विशिष्ट रूप से जन्म के आधार पर वंचित जाति, लिंग, धर्म और जनजातियों द्वारा वहन किया जाता है। गैर-अनुसूचित जाति समूह की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता दर आदिवासियों के लिए 14 प्रतिशत अधिक है और दलितों के लिए यह 9 प्रतिशत अधिक है। उसी तरह नगरीय क्षेत्रों में दलितों और मुसलमानों की निर्धनता अन्य समूहों से 14 प्रतिशत अधिक है।

अभिजात वर्ग द्वारा शक्ति का बलपूर्वक अधिग्रहण कर लेना सार्वजनिक जीवन की एक अप्रतिवेदित कहानी है। अभिजात वर्ग राजनीतिक प्रभाव खरीद लेते हैं, जिसके कारण वे कर में छूट, भूमि में रियायत, सस्ते ऋण का लाभ उठाते हैं, और बिजली, पानी आदि सब्सिडी पर खरीदते हैं। भारत में कॉरपोरेट्स पर टैक्स की छूट 5 लाख करोड प्रतिवर्ष है, जिससे भारत के शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य सुरक्षा पर लगाए जाने वाले बजट के अंतर को काफी हद तक कम किया जा सकता है। ऑक्सफैम की गणना है कि यदि 1.5 प्रतिशत टैक्स भी विश्व के सभी अरबपतियों की संपत्ति पर लगाया जाता है, तो इससे वैश्विक स्तर पर प्रत्येक बच्चे को स्कूल जाने का अवसर प्राप्त हो सकता है और विश्व के सभी गरीब देशों में स्वास्थ्य सेवाएं दी जा सकती है, लगभग 23 लाख जीवन बचाए जा सकते हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य व जीवन अवसरों के संदर्भ में यह असमानता निरन्तर वैश्विक स्तर पर लगातार बढती ही जा रही है, जो कि अनुचित है व चिन्ता का विषय है, क्योंकि एक ओर वे अमीर लोग हैं, जो संपत्ति में ही पैदा होते हैं, और उनकी आने वाली पीढी, पीढीगत आर्थिक स्तर को अधिग्रहित कर लेती है। दूसरी ओर वे गरीब लोग है जो गरीबी में ही जन्म लेते हैं और आगे आने वाली पीढी भी सक्षम होने एवं मेहनत करने के बावजूद भी अशक्त, अभावग्रस्त व दरिद्रता में ही जीवन जीने को मजबूर होती है। ऑक्सफैम के अंतरर्राष्ट्रीय कार्यकारी निर्देशक विनी बयांयिमा के अनुसार 'सबसे गरीब देश में भी एक अमीर परिवार में जन्में बच्चे को सबसे अच्छे स्कूल में जाने का अवसर प्राप्त होता है और अगर वह बीमार है तो उसे उच्चतम गुणवत्ता वाली देखभाल प्राप्त होती है, वहीं दूसरी ओर गरीब परिवार धन की कमी के कारण अपने बच्चों को इलाज के अभाव में मरते हुए देखने को मजबूर है' । (ऑक्सफैम 2014)

ऑक्सफैम के सीईओ अमिताभ बेहर का कहना है कि अमीर और गरीब के बीच की खाई को असमानता को समाप्त करने वाली नीतियों के बिना हल नहीं किया जा सकता और इसके लिये अधिक सरकारी प्रयासों व प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। निचले स्तर के 95.3 करोड़ लोग जो देश की आबादी का 70 प्रतिशत है, के पास जितनी सम्पत्ति है, उससे चार गुना से अधिक संपत्ति भारत के 1 प्रतिशत सबसे अमीरों के पास है, बाकी सभी भारतीय अरबपतियों की कुल संपत्ति पूरे साल के बजट से अधिक है। 4.6 अरब लोग, जो विश्व की 60 फीसदी आबादी का निर्माण करते हैं, से अधिक संपत्ति दुनियां के 2153 अरबपतियों के पास है। विश्व आर्थिक मंच (वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम) के अनुसार वैश्विक असमानता चौंकाने वाली और विस्तृत है, प्रत्येक दशक में अरबपतियों की संपत्ति में गिरावट के बावजूद अरबपतियों की संख्या दोगुनी हो गई है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की वार्षिक रिपोर्ट (2020) ने यह चेतावनी दी है कि 2019 में व्यापक आर्थिक कमजोरियों और वित्तीय असमानताओं की निरंतरता से गरीब व अमीर के मध्य स्थित खाई लगातार और अधिक चौडी होती जा रही है। व्यापक रूप से प्रचलित विश्वास है कि असमानता से लड़ने से आर्थिक विकास की गति को क्षति पहुँचेगी के विपरीत आक्सफैम की रिपोर्ट (2019) के अनुसार इस बात के प्रमाण अधिक है कि गरीबी की अत्याधिकता, विकास के लिए नुकसानदायक है। मजबूत और स्थाई विकास के लिए असमानता को कम करने की आवश्यकता है, क्योंकि असमानता अन्य कार्यशील व क्षमतावान लोगों की उत्पादकता और मनोबल को कम करती है और बाजार की गतिविधियों में भाग ले सकने वाले लोगों की संख्या को कम करता है। भारत में मनरेगा जैसे सार्वजनिक निवेश न केवल गरीब जनसंख्या को सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा उपलब्ध कराता है, वरन् लाखों लोगों को उपयोगी आय अर्जित करने का अवसर भी प्रदान करता है, जो निचले स्तर पर आर्थिक वृद्धि को प्रेरित करने का अच्छा प्रयास है।

लैंगिकता व असमानता

अमिताभ बेहर का मत है कि पिछले तीन दशकों से वैश्विक स्तर पर जातीय, नस्लीय आधारों पर की जाने वाली असमानताओं में गिरावट आ रही है लेकिन घरेलू आय के संदर्भ में असमानता बढी है। कई देशों में विशिष्ट रूप से आर्थिक रूप से उन्नत देशों में लिंग भेद वाली अर्थव्यवस्थायें असमानता के संकट को पोषित कर रही हैं। साधारण लोगों और विशेष रूप से गरीब महिलाओं और लडकियों की आजीविका की कीमत पर अभिजातों का भविष्य फल फूल रहा है। हमारी विखण्डित अर्थव्यवस्थाएं आम जनता की आजीविका की कीमत पर अरबपतियों व बड़े बड़े कारोबारियों की जेब भर रही हैं। यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या अरबपतियों का अस्तित्व होना आवश्यक है? बेहर का मत है कि अमीर व गरीब के मध्य के अंतराल को असमानता को समाप्त करने वाली उद्देश्यपरक नीतियों व सरकारों की प्रतिबद्धता के बिना दूर नहीं किया जा सकता। वर्तमान अर्थव्यवस्था द्वारा महिलायें व लडकियां सबसे कम लाभान्वित होती हैं, महिलायें हमारे समाज के 'अप्रत्यक्ष इंजन' की तरह हैं जो खाना पकाने, सफाई और बच्चों व बुज़ुर्गों की देखभाल करने में कई घंटे व्यतीत करती हैं तथा हमारे समाज की आर्थिक व्यवस्था एवं समाज व्यवस्था को अप्रत्यक्ष रूप से संचालित कर रही हैं। इसी कारण महिलाओं व लड़कियों के पास शिक्षा प्राप्त करने एवं एक अच्छा जीवन यापन करने के अवसर बहुत कम होते है। यही कारण है कि महिलायें अर्थव्यवस्था के निचले स्तर में फंसी हुई हैं, और इसिलीये समाज व्यवस्था को बनाये रखने में महिलाओ की भागीदारिता का कम

आंकलन किया जाता है जो कि अनुचित है, न्यायसंगत नही है। बेहर का मत है कि सरकारों द्वारा उच्च वर्गो व निगमों पर उचित कराधान से महिलाओ की प्रस्थिति सुधारने व गरीबी और असमानता से निपटने में मदद मिल सकती है। इसके अतिरिक्त सरकारें उन सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे को भी कम कर रही है, जो महिलाओं व लड़कियों के काम के बोझ को कम करने में मदद कर सकती हैं। सरकारों को अधिक मानवीय अर्थव्यवस्थाओं का निर्माण के लिए दूसरे महत्वपूर्ण क्षेत्रों की तरह घरेलू कार्य व देखभाल के कार्यों को भी प्राथमिकता देनी चाहिए न कि कुछ समृद्धशाली तथा उच्च स्तरीय व्यवसाय को ही।

असमानता एवं लोकतांत्रिक मूल्यः एक विरोधाभास

बढ़ती असमानता के संदर्भ में दो विरोधभासी मत है। प्रथम मत है कि असमानता आर्थिक वृद्धि एवं वैश्विकृत तकनीकी विकास का अपरिहार्य परिणाम है, वही दूसरा मत है कि असमानता विकास की अपरिहार्यता नही है, बल्कि सुविचारित, आर्थिक और राजनीतिक नीतियों का परिणाम है, जिसके दो बड़े वाहक हैं- प्रथम बाजार की रूढ़िवादी प्रवृत्ति और द्वितीय अभिजातों द्वारा आर्थिक शक्ति पर अधिकार। इन दोनों के ही भारत में प्रमाण भी उपलब्ध हैं। बाजार की रूढ़िवादिता को भारत में सफल सरकारों से समर्थन प्राप्त होता रहा है। आर्थिक वृद्धि के लिए वर्तमान आर्थिक नीति निर्धारकों का मत है कि सरकार के खर्चे को कम किया जाए और बाजार को स्वतंत्र किया जाए। यह नीति शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य तथा बढ़ते हुए करारोपण में सरकार के हस्तक्षेप का विरोध करती है और श्रम सुरक्षा और जमीनों एवं जंगलों के अधिग्रहण की मांग करती है। ये सभी असमानता को बढ़ाते हैं। आई.एम.एफ. (International Monetary Fund) के प्रबंधकीय निदेशक क्रिस्टिन लेजार्ड के अनुसार बहुत से देशों में अभी तक विकास का लाभ बहुत कम लोगों को मिला है। यह स्थिरता व निरंतरता का रास्ता नही है(हिंदू बिजनिस लाइन, 2014) असमान रूप में आय का वितरण आगे जाकर विकास की गति व निरंतरता को नुकसान पहुंचा सकता है, यह अपवर्जन की अर्थव्यवस्था की ओर ले जाता है। अमेरिका व भारत में बढ़ती असमानता की तुलना करते हुए लेजार्ड कहते हैं 'अमेरिका में महामंदी से पूर्व जो असमानता थी, वह वापस आ गई है और अब 2009 के बाद से आय व लाभ के 93 प्रतिशत पर 1 प्रतिशत अमीरों ने कब्जा कर रखा है जबकि निचले स्तर के 90 प्रतिशत लोग गरीब हो गए हैं। भारत में अरबपति समुदाय की कुल संपत्ति 15 वर्षों में 12 गुना बढ़ गई है जो इस देश में पूर्ण गरीबी को समाप्त करने के लिए पर्याप्त हो सकती है। लेजार्ड का तर्क है कि धन का वितरण और प्रचलित आर्थिक रूढ़िवाद के विपरीत पुनः वितरण की नीतियां विकास के लिए प्रतिकूल नही है क्योंकि यदि आप आय में गरीबों की हिस्सेदारी बढ़ाते हो तो इसका वृद्धि पर कई गुना प्रभाव पड़ेगा। लेकिन अमीरों के साथ ऐसा करने पर देश की आर्थिक वृद्धि पर कोई प्रभाव नही होगा।

निशा अग्रवाल (सीईओ, ऑक्सफैम इंडिया) के अनुसार भारत में आर्थिक वृद्धि का लाभ निरंतर कुछ हाथों में ही केंद्रित होता जा रहा है, यह चिन्ता का विषय है। अरबपतियों का तेजी से बढ़ना, बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था का संकेत नही है, लेकिन एक असफल अर्थव्यवस्था का संकेत अवश्य है। वे लोग जो कठिन मेहनत करके देश के लिए अन्न उत्पादन कर रहे हैं, बुनियादी ढांचे का निर्माण करते है, फैक्ट्रियों में कार्य करते हैं, वे अपने बच्चों की शिक्षा, पारिवारिक सदस्यों के लिए दवाईयां खरीदने और दो वक्त के भोजन का प्रबंध करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

विडम्बना यह है कि हमारे सरकारी स्कूलों में संसाधन पर्याप्त नहीं है, प्रशिक्षित व प्रेरक शिक्षक नहीं है, बुनियादी ढांचे की कमी है और मात्र 7 प्रतिशत लोग ही स्नातक स्तर की शिक्षा पूर्ण कर पाते हैं। दस में से छः अनौपचारिक रोजगार में लगे हुए हैं और वृद्धावस्था में मिलने वाली पेंशन से वंचित है, इन कारणों से उच्च व निम्न वर्ग के मध्य भेद और अधिक बढ रहा है। इस प्रकार का बढता विभाजन लोकतंत्र को कमजोर करता है परिणामस्वरूप इससे भ्रष्टाचार और पक्षपात को बढावा मिलता है। राजन गुरूक्कल (2018) भी इसी प्रकार के विचार रखते हैं कि लोकतंत्र की कीमत पर कॉरपोरेट को बढावा मिलता है। पूंजीवादी विकास का अपरिहार्य परिणाम लोकतंत्र की हानि है। वे कहते हैं कि पिछले दो दशकों में भारत प्रगति अवश्य कर रहा है लेकिन इससे धीरे-धीरे लोकतांत्रिक राज्य की लोकतांत्रिकता, प्रकार्यात्मक निरंकुशता में बदल रही है। परिणामस्वरूप कॉरपोरेट घराने राज्य शक्ति के निर्माण में दखल रखते हैं जिसके आधार पर उन्हें प्रकार्यात्मक निरंकुशता के लिए आसानी से समर्थन प्राप्त हो जाता है। यह प्रक्रिया जाति और सांप्रदायिकता से जुडी अविवेकी जनता की भावनाओं के कारण सुगम हो जाती है।

युवा जनसंख्या व अवसरों की असमानता

सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के निचले पायदान पर रहने वाले व्यक्तियों को असमानता ने बहुत अधिक प्रभावित किया है। असमान जीवन अवसरों, लैंगिक भेदभाव एवं संपत्ति और शिक्षा के अवसरों में असमानता, शहरों और उनमें रहने वाले हाशिये के लोगों के मध्य बढते भेद के कारण निचले स्तर पर निराशा बढ रही है। असमानता के कारण युवाओं को अवसरों की कमी का सामना करना पडता है। नेशनल सर्वे ऑफिस के अनुसार भारत की जनसंख्या का 65 प्रतिशत भाग कार्यशीलता की उम्र में है अर्थात युवा जनसंख्या है, जिसका लाभ लेकर भारत आगे बढ सकता है लेकिन त्रासदी यह है कि इस युवा कार्यशील जनसंख्या का 50 प्रतिशत अभी बेरोजगार है, उन्हें अवसर उपलब्ध नहीं हो रहे। बेरोजगारी में वृद्धि हो रही है और ऐसे युवाओं की निरन्तर संख्या बढ रही है जो देश के किसी भी कोने में किसी भी प्रकार के कार्य और किसी भी शर्त पर करने को तैयार हैं। सामाजिक-आर्थिक असमानता जनांकिकी संक्रमण के संकट को भी प्रस्तुत करती है, विशिष्ट रूप से आर्थिक असमानता। भारत अभी उसी दौर से गुजर रहा है जहां इसकी आबादी का एक बड़ा हिस्सा कार्यशीलता की उम्र में है। कई लोगों ने उसे भारत के लिए लाभांश माना है। इसे युवा उभार भी कहा जा सकता है। इस देश में युवा जीवन अवसरों और अपनी क्षमता को पहचानने के अवसरों में बहुत सी अमानताओ का सामना करते हैं। भारत में कार्यशील युवा जनसंख्या एवं असमानता से संबंधित कुछ मत इस प्रकार से हैः-

- युवाओं की कार्यशील जनसंख्या को पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रशिक्षण और मनोबल से युक्त किया जाना चाहिए, जिससे कि वे अर्थव्यवस्था व समाज के लिए पूर्ण क्षमता से योगदान कर सके। दूसरी ओर आवश्यकता है कि सभी युवाओं के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराए जाएं।
- भारत में कार्यशील युवाओं की कार्यक्षमता को काम में लेने से अधिक वृद्धि हो सकती है, लेकिन वह अधिकांश बेरोजगार हैं। उच्च आर्थिक वृद्धि, बेरोजगारी वृद्धि दर को बढावा दे रही है, कुछ नौकरियों को कम लक्ष्य व कम भुगतान की बनाकर असुरक्षित और असंरक्षित बनाया जा रहा है।

- जीवन अवसरों को किसी की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार के अवसरों के रूप में समझा जाता है। जीवन अवसरों और अस्तित्व के अवसरों में असमानता वंचित और बेदखल समूह के लिए गतिरोधक का कार्य करते हैं, अतः वर्ग, लिंग व धर्म के आधार पर सामाजिक वंचित समूहों और अशक्त समूहों को अवसर उपलब्ध कराये जायें।
- जीवन अवसरों की असमानता की यह स्थिति अपरिहार्य नहीं है, बल्कि नव उदारवादी समय में सार्वजनिक नीतियों का प्रत्यक्ष परिणाम है। राज्य इस प्रचलन को सार्वभौमिक गुणवत्ता पूर्ण पोषण, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा का सभी लोगों के लिए विस्तार करके और कृषि में महत्वपूर्ण उच्च निवेश को सुनिश्चित करके, कृषि श्रमिकों और विशिष्ट रूप से छोटे और सीमांत किसानों, वन श्रमिकों और शिल्प कारों की आय को संरक्षित करके पूर्णतया बदल सकता है।

असमानताः एक चुनौती

वर्तमान में आर्थिक उदारीकरण भारतीय राज्यों के लिए व्यापक आर्थिक नीति का मुख्य केंद्र बन गया है। हाल ही के दशकों में आर्थिक उदारीकरण की नीतियों ने वैश्विक निजी उद्यमों को प्रवेश का मार्ग दिया जिसके आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावशाली ऊँचाइयों पर ले जाए जाने का प्रयास किया जा रहा है, जिसे पहले राज्य द्वारा अधिकार में रखा जाता था। सुधार के प्रयासों ने अर्थव्यवस्था को वैश्विक प्रतियोगिता के लिए खोल दिया, इसमें राजस्व की वृद्धि और व्यापक अर्थव्यवस्था की स्थिरता के लिए अनुशासन पर बल दिया गया, व्यापार और पूँजी बाजार को उदार बनाया तथा परमिट राज को समाप्त किया। स्वास्थ्य, शिक्षा, सार्वजनिक परिवहन और बुनियादी सार्वजनिक संरचना के प्रतिस्पर्धी निजी प्रावधानों को सुविधा दी और प्रतियोगिता में विस्तार किया गया।

भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार हेतु तीन प्रमुख वादे किये गयेः- प्रथम, इन सुधारों से मुक्त अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी, आर्थिक वृद्धि में तेजी आएगी और विकास आएगा। द्वितीय, यह वृद्धि अनेक धन समृद्धि और नौकरियों को सृजित करेगा और इस प्रकार गरीबी, और भूख को मिटाएगा। तृतीय, यह सुधार महत्वपूर्ण रूप से भ्रष्टाचार को कम करेगा और निजी उद्यम के लाइसेंस और नौकरशाही विनिमय की प्रथाओं को समाप्त करने की मांग होगी। इनमें से प्रत्येक वादे पर हम कहां खड़े हैं? यह जानने के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक कल्याण, कृषि और रोजगार के अवसरों के क्षेत्र में बढ़ती असमानताओं की प्रवृत्ति का मूल्यांकन करना होगा और विश्लेषण करना होगा कि सरकार कैसे और कितना शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा, कृषि एवं रोजगार पर खर्च करती है क्योंकि सापेक्षिक रूप से इन क्षेत्रों में सुधार नहीं हुआ वास्तव में गिरावट आई है। इस प्रकार के सरकार द्वारा किए गए खर्च से संभावित जनसांख्यिकी लाभांश प्राप्त होने की संभावना अभी भी दूर है।

आज भारत विश्व में तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था में से एक है इसने पूँजी के अभूतपूर्व स्तर बनाये हैं, इसलिए भारत में विश्व के डॉलर अरबपतियों की तीसरी बड़ी आबादी यहाँ पर है। मध्यम वर्ग के भारतीयों के स्तर में वृद्धि हुई है, क्योंकि उन्होंने सरल परंपरागत जीवन से अपने जीवन को भौतिकवादी स्वरूप मे रूपांतरित कर लिया है, मितव्ययिता की आदत को त्याग कर अनियंत्रित उपभोग के मूल्यों को जीवन में सम्मिलित का लिया है। आर्थिक

सुधारों ने उच्च आर्थिक वृद्धि को प्रोत्साहित किया वर्तमान में भारत में उच्च स्तर पर पूँजी मे वृद्धि हो रही है। लेकिन यह पूँजी बहुत ही असमान रूप से विभाजित है, जिससे ऐतिहासिक आधार पर पहले से ही असमानता वाले देश में आर्थिक असमानता के स्तरों में तेजी से वृद्धि हुई है। इसमें कोई संदेह नही कि पूर्ण निर्धनता का स्तर घट रहा है, कुपोषण और भूख की घटनायें कम हो रही है लेकिन यह तीव्र गति से कम हो रही हो ऐसा नही है। आर्थिक सुधार के वादों के मध्य जिस पर सबसे अधिक विश्वास किया गया है, वह यह है कि इस तीव्र विकास से लाखों रोजगार पैदा होंगें लेकिन वास्तव में जो देखा गया कि तीव्र गति से पूँजी का विस्तार तो हुआ है लेकिन यह विस्तार असमान रूप से हुआ है। भारत में गरीबों के लिए गरिमामय माने जाने वाले कार्यों का विस्तार नही किया गया। इसके विपरीत उच्च आर्थिक वृद्धि की चकाचौंध के कारण औपचारिक और अनौपचारिक क्षेत्रों में कई प्रकार के कार्यों को जोडा गया, लेकिन इसमें सभ्य व सम्मानजनक माने जाने वाले कार्यों की कमी ही रही।

अमृत्य सेन ने अपनी पुस्तक 'द कंट्री ऑफ फर्स्ट बॉयज'(2015) में विशेषाधिकार प्राप्त और बाकी लोगों के मध्य व्याप्त भेद के संदर्भ में लिखा है 'असमानता के आर्थिक तथ्य विचारणीय है, गरीबी में जी रहे लोगों की पीडा जिसका कि निवारण किया जा सकता है, के संदर्भ में विशेषाधिकार प्राप्त लोगों में नाराजगी की अनुपस्थिति उनकी उदासीनता को दर्शाती है जो चिन्ताजनक है'। प्रशासनिक पदों पर आसीन अधिकारियों के सार्वजनिक जीवन मूल्यों में परिवर्तन आया है। स्वतंत्रता के बाद की पहली अर्ध शताब्दी में सरकारी अधिकारियों द्वारा सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी के लिए सामाजिक मानदंडों की स्वीकृति एवं पालन को आवश्यक माना गया था। सरकारी अधिकारियों ने निजी व्यवसाय से सावधानी पूर्वक सार्वजनिक दूरी बनाए रखी थी। आज सरकारी अधिकारी निजी व्यवसायों के साथ घनिष्ठ रूप में जुड गए हैं, वे 'सुपर रिच' भव्य जीवन शैली से लाभान्वित हो रहे हैं और इसे राष्ट्र निर्माण में योगदान के रूप में स्वीकार करते हैं।

वर्तमान में भारत में कोविड-19 महामारी संक्रमण के विकराल स्वरूप व इसके दुष्प्रभाव के कारण असमानता के भेद और अधिक बढते जा रहे हैं, उच्च वर्ग व निम्न वर्ग के मध्य स्थित मध्यमवर्ग जो भारत का सबसे बड़ा वर्ग रहा है, सिकुडता जा रहा है। मार्च 2020 में भारत में मध्यम वर्ग के लोगों की संख्या 9 करोड़ 90 लाख थी, जो मई 2021 में 6 करोड़ 60 लाख रह गई, 3 करोड़ 30 लाख मध्यम वर्ग के लोग अब निम्न वर्ग में सम्मिलित हो चुके हैं। अनिरुद्ध कृष्णा की पुस्तक 'वन इलनेस अवे (2010) में उन्होंने बताया कि विभिन्न जोखिमों, जिनमें स्वास्थ्य सबसे अहम है, के चलते गरीबी रेखा से ऊपर के लोग अक्सर इस रेखा से नीचे खिसक जाते हैं। वर्तमान महामारी के दौर में तो यह चुनौती और भी अधिक बढ गई हैं। गरीब के सामने न केवल आजीविका का संकट है वरन बीमारी का संकट और उसके इलाज के खर्च का संकट भी है। जीवन बचाने के लिए वह सब कुछ देने और उधार करने के लिए तैयार है। स्वास्थ्य संकट अपने आप में आर्थिक संकट है, उस पर रोजगार छूट जाना अतिरिक्त बोझ है। असंगठित लोगों का व्यवसाय ठप हो जाता है जबकि समग्र व्यापार के आकार पर कोई प्रभाव नही पडता।

अतः भारत में व्याप्त सामाजिक-आर्थिक असमानता विशिष्ट रूप से जीवन अवसरों व अस्तित्व के संदर्भ में उन तक पहुँच पर निर्भर करता है। सामाजिक-आर्थिक असमानता के पैमाने परिवर्तित हो रहे हैं विशिष्ट रूप से आर्थिक

असमानता के। पूँजी का केंद्रीकरण कुछ ही हाथों में होता जा रहा है जो अन्य वर्गों के समक्ष चुनौती व चिन्ता को बढा रहा है। निम्न मध्यम वर्ग अवसरों की कमी के कारण निम्न वर्ग में समाहित हो जाता है जिससे उच्च व निम्न वर्ग के मध्य भेद गहराता जा रहा है। निजीकरण की नीति इस भेद को और अधिक बढा रही है।

निष्कर्ष

भारत में आर्थिक सुधारों का मूल्यांकन हमें स्वीकार करने को बाध्य करता है कि शिक्षा व स्वास्थ्य से दूर सार्वजनिक प्रावधान एक ऐसा कदम है कि जिसके परिणामस्वरूप जनता को नुकसान हो सकता है। आर्थिक वृद्धि अपने आप में सामाजिक व आर्थिक रूप से वंचित लोगों के लिए बेहतर जिंदगी की कोई निश्चितता नहीं है। पूँजीवाद व धन के असमान वितरण को कम करके सभी को स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा, उपलब्ध करायी जा सकती है, जीवन अवसर व अस्तित्व और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अवसरों की उपलब्धता से भूख, रोजगार की अनिश्चितता, प्रव्रजन, अच्छे स्वास्थ्य की वंचना से बचाया जा सकता है और युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराकर उनकी पूर्ण क्षमता का दोहन किया जा सकता है। आज भारत को इन नवीन संकटों से मुक्त करने के लिए दृढ इच्छा शक्ति व आर्थिक नीतियों की आवश्यकता है तभी हम राजनीतिक और नैतिक इच्छा शक्ति को एक बार फिर से बदल पाएंगे जिससे कि सभी लोगों को गरिमापूर्ण रोजगार, उचित स्वास्थ्य सुरक्षा, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा की उपलब्धता का विश्वास दिला पायेंगे। बाजार एवं निजीकरण उन्हें इन चीजों का आश्वासन नहीं दे सकते हैं और उस धन का तब तक विकास नहीं हो सकता जब तक उसे साझा नहीं किया जाए।

भारत में वर्तमान में उभरती हुई युवा जनसंख्या अवसर का निर्माण कर रही है जिसे स्वतः ही जनांकिकीय लाभांश में परिवर्तित नहीं किया जा सकता। इसके लिए हमें जनता पर उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक संरक्षण में अधिक से अधिक सार्वजनिक खर्च करने की आवश्यकता है। हमें कृषि में अधिक निवेश की आवश्यकता है और लाखों लोगों के हाथों में प्रभावी मांग को बढाकर बाजार में अधिक लोगों की भागीदारिता को सम्मिलित कर के निचले स्तर से विकास को प्रोत्साहित करना है। बढती हुई असमानता को रोकने के कई उपाय वर्तमान में प्रचलित हैं। वैधानिक मजदूरी को बढाना व लागू करना, अमीरों पर कर वृद्धि करना, शिक्षा, स्वास्थ्य और लघु कृषि में निवेश को बढाना, वृद्धों और विकलांगों के लिए सामाजिक सुरक्षा को सुनिश्चित करना, मातृत्व व शिशुओं को प्राप्त होने वाले लाभों में वृद्धि करना, वृहद स्तर पर सार्वजनिक और सामाजिक रूप से वंचित समूहों की रक्षा करना, ग्रामीण क्षेत्रों व शहरी मलिन बस्तियों में पानी, स्वच्छता और बुनियादी सुविधाओं को सुनिश्चित करना और श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा करना। लेकिन भारत ही नहीं वरन् विश्व के अधिकांश हिस्सों में बाजार की रूढिवादिता और शक्तिशाली आर्थिक समझौते अभी भी राज्य की प्राथमिकता को निर्धारित करती है और अधिक समानता वाली नीतियों का विरोध करती है, इसलिए हम एक ऐसी दुनियां में है जहां गरीब लोग, महिलाएं और सामाजिक रूप से वंचित समुदाय कठिन परिश्रम करते हैं लेकिन इसके बावजूद सम्मान के साथ जीना उनके लिए न केवल दूर की बात है, वरन् थोड़ा असंभव सा सपना भी है।

सन्दर्भ

Alejo, Diego, et.al. 2018. Reward Work, Not Wealth: To end the inequality crisis, we must build an economy for ordinary working people, not the rich and powerful. UK, Oxfam House.

Beteille, Andre. 1999. "The Reproduction of Inequality: Occupation, Caste & Family." Pp-127-156 in Social Inequality in India: Profiles of Caste, Class & Social Mobility. ed. Jaipur, Rawat Publications.

Dandekar, V. M. 1999. "Nature of Class Conflict in Indian Society." Pp-298-329 in Social Inequality in India: Profiles of Caste, Class & Social Mobility. ed. Jaipur, Rawat Publications.

Franco, Emilio Granados, et al. 2020. The Global Risks Report 2020. Insight Report 15th Edition. World Economic Forum. (http://www3.weforum.org/docs/WEF_Global_Risk_Report_2020.pdf).

Gurukkal, Rajan. 2018. "Death of Democracy: An Inevitable Possibility Under Capitalism." Economic & Political Weekly 53(34): 104-111.

Krishna, Anirudh. 2010. One Illness Away: Why People Become Poor and How They Escape Poverty. UK,Oxford University Press.

Mander, Harsh & et al. 2019. Unequal Life Chances: Equity & Demographic Transition in India. New Delhi, Sage, Yoda Press.

Nagraj, R. 2012. Growth, Inequality & Social Development in India: Is Inclusive Growth Possible?.Geneva, MacMillan.

Oxfam. 2020. Inequality. (https://www.oxfam.org/en/tags/inequality).

Sen, Amartya. 2015. The Country of First Boys: And Other Essays. India, Oxford University Press.

Seery, Emma & Arendar, Caistor. 2014. Time to End Extreme Inequality. (https://oi-files-d8-prod.s3.eu-west-2.amazonaws.com/s3fs-public/file_attachments/cr-even-it-up-extreme-inequality-291014-summ-en.pdf).

Sharma, K.L. ed. 2001. Social Inequality in India: Profiles of Caste, Class & Social Mobility. Jaipur, Rawat Publications.

Singh, Gagan Preet. 2017. "Socio-Economic Inequality in India: A Theoretical Review." (https://www.researchgate.net/publication/329701648_Socio-Economic_Inequality_in_India_A_Theoretically_Review).

Verma, N.M.P. & Srivastav, Alpana. 2021. The Routledge Handbook of Exclusion, Inequality & Stigma in India. India, Routledge.

सुमित्रा शर्मा सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

ईमेल: sumitrasharma1974@gmail.com